न्याय दर्शन का सामान्य परिचय

संस्थापक → महर्षि गौतम (दूसरा नाम - मेधा तिथि गौतम)

न्याय दर्शन → आस्तिक दर्शन, ईश्वरवादी दर्शन, वस्तुवादी, प्रमाण-शास्त्रीय दर्शन।

न्याय का अर्थ → (i) वात्सायन के अनुसार, "प्रमाणों के द्वारा किसी अर्थ (वस्तु) की परीक्षा को न्याय कहा जाता है - "प्रमाणैरर्थपरीक्षणं न्याय"।

(ii). न्याय का अर्थ युक्ति संगत विवेचन है।

(iii). न्याय दर्शन को न्याय-विद्या, न्यायशास्त्र, तर्कविद्या, हेतुविद्या, प्रमाणशास्त्र, आन्वीक्षिकी दर्शन आदि नामों से भी जाना जाता है।

(iv). 'नीयते प्रत्याप्यते विवक्षितार्थोऽनेनेति न्याय': - अर्थात् जिस साधन या प्रक्रिया के द्वारा विवक्षित अर्थ की प्रतीति (बोध) कराई जाती है, उसे 'न्याय' कहते हैं।

(v). न्याय दर्शन को अक्षपाद ('आँख + पैर) दर्शन भी कहते हैं।

→ महर्षि गौतम को अक्षपाद के नाम से भी जाना जाता है।

→ न्याय दर्शन का परवर्ती विकास 'नव्य-न्याय' है। नव्य न्याय के प्रवर्तक गंगेश उपाध्याय हैं।

→ न्याय के ग्रंथ → न्याय दर्शन का मूल ग्रंथ न्याय-सूत्र है जो गौतम रचित है। यह प्राचीन न्याय का ग्रंथ है।

→ न्यायसूत्र ग्रंथ में पाँच (5) अध्याय हैं तथा प्रत्येक अध्याय के दो खण्ड हैं।

→ इसके अतिरिक्त कुछ प्रमुख दार्शनिकों के ग्रंथ हैं —

→ वात्स्यायन - न्याय भाष्य

→ उद्योतकर - न्याय वार्तिक

→ वाचस्पति मिश्र - न्याय-वार्तिक-तात्पर्य-टीका

→ उदयनाचार्य - तात्पर्य-परिशुद्धि, न्याय-कुसुमांजलि

→ जयन्त - न्यायमंजरी

→ भासर्वज्ञ - न्याय सार
→ वरदराज - तार्किक रक्षा (न्याय-वैशेषिक)
→ केशव मिश्र - तर्क भाषा
→ शिवादित्य - सप्तपदार्थी (न्याय-वैशेषिक)
→ लौगाक्षि भास्कर - तर्क कौमुदी
→ वल्लभाचार्य - न्याय लीलावती
→ शंकर मिश्र - लीलावती कण्ठाभरण

⇒ नव्य न्याय के प्रमुख ग्रंथ → आधुनिक काल के न्याय-दर्शन को नव्य-न्याय के रूप में जाना जाता है, जिसे प्रमाणशास्त्र के रूप में भी स्वीकार किया गया है।

→ गंगेश उपाध्याय - तत्वचिन्तामणि
→ पक्षधर मिश्र - मण्यालोक
→ रूचिदत्त - मकरन्द
→ वासुदेव सर्वभौम - तत्वचिन्तामणि व्याख्या
→ रघुनाथ तर्क शिरोमणि - मण्यालोकदीधिति
→ मथुरानाथ - तर्कवागीश, विवृति
→ जगदीश तर्कालंकार - जागदीशी
→ विश्वनाथ पंचानन भट्ट - भाषा परिच्छेद, न्याय सिद्धांत मुक्तावली
→ अन्नम भट्ट - तर्क संग्रह

⇒ प्राचीन एवं नव्य न्याय में अन्तर →

• विभाजन - प्राचीन न्याय - बारहवीं (12) शताब्दी के पूर्व का दर्शन है।
नव्य न्याय - बारहवीं शताब्दी के बाद का दर्शन है।

→ प्राचीन न्याय में पदार्थों की विशद मीमांसा (व्याख्या) की गई है, जबकि नव्य-न्याय में प्रमाणों का वर्णन है।

→ प्राचीन न्याय का प्रारम्भ अक्षपाद प्रमाणमीमांसा से है, किंतु उसका लक्ष्य 'मुक्ति' है। इस तरह प्रमाणमीमांसा प्राचीन -

न्याय में केवल साधन है, जबकि नव्य-न्याय में सब कुछ प्रमाण मीमांसा है, साध्य भी और साधन भी।

→ न्याय दर्शन में 16 पदार्थों का विवेचन हुआ है। वे हैं — प्रमाण, प्रमेय, संशय, प्रयोजन, दृष्टांत, सिद्धांत, अवयव, तर्क, निर्णय, वाद, जल्प, वितंडा, हेत्वाभास, छल, जाति, निग्रहस्थान।

→ प्रमाण → न्याय-दर्शन में चार (4) प्रमाण बताये गये हैं — प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द और उपमान प्रमाण।

→ प्रमेय (ज्ञेय) - प्रमाण के द्वारा जिस विषय का ज्ञान हो, उसे 'प्रमेय' कहते हैं। 'न्यायसूत्र' में 12 प्रकार के प्रमेय बताये गये हैं — आत्मा, शरीर, इंद्रिय, अर्थ, बुद्धि, मन, प्रवृत्ति, दोष, प्रेत्याभव, फल, दुःख, अपवर्ग।

→ प्रमाता - ज्ञाता (जानने वाला)
→ प्रमा - यथार्थ अनुभव
→ प्रमाण - यथार्थ अनुभव की प्राप्ति का साधन।

⇒ भारतीय दर्शन में समान-तंत्र वाले दर्शन →

इन्हें समान-तंत्र इसलिए कहा जाता है क्योंकि इनमें बहुत सारे पक्षों पर समानता होती है, तथा कुछ असमानता भी।

(i). न्याय - वैशेषिक
(ii). सांख्य - योग
(iii). मीमांसा - वेदान्त

⇒ न्याय-वैशेषिक में सामान-तंत्र एवं असमान तंत्र →

⇒ समानता के कुछ बिंदु →

(1) दोनों दर्शनों के साहित्य समान रूप से मिलते हैं।
(2). जो न्याय-दर्शन के आचार्य हैं वे वैशेषिक दर्शन के भी आचार्य हैं।
(3). कारणता सिद्धांत के सम्बन्ध में दोनों 'असत्कार्यवाद' को मानते हैं।

(4). दोनों परमाणुओं से जगत के रचना की बात करते हैं।
(5). दोनों आस्तिक, ईश्वरवादी एवं बहुतत्ववादी दर्शन हैं।
(6). दोनों यह मानते हैं कि ईश्वर जगत का केवल निमित्त कारण है।
(7). अज्ञान ही बंधन का मूल कारण है।
(8). तत्वज्ञान से अज्ञान का नाश होता है।
(9). चेतना आत्मा का आगन्तुक गुण है।
(10). मोक्ष की अवस्था में आत्मा सुख-दुख एवं चेतना रहित हो जाती है।

⇒ असमानता के बिंदु →

(1). न्याय दर्शन में ज्ञान-मीमांसा प्रमुख है, जबकि वैशेषिक में तत्वमीमांसा की।

(2). न्याय दर्शन 4 प्रमाण मानता है, जबकि वैशेषिक दर्शन केवल दो प्रमाणों (प्रत्यक्ष, अनुमान) को ही स्वीकार करता है तथा शब्द एवं उपमान को अनुमान के अन्तर्गत मानता है।

(3). न्याय दर्शन में (16) सोलह पदार्थों को माना गया है, जबकि वैशेषिक दर्शन में 7 पदार्थ बताये गये हैं।

⇒ न्याय दर्शन में ईश्वर षडैश्वर्य से युक्त बताया गया है। वे हैं— आधिपत्य, वीर्य, यश, श्री, ज्ञान एवं वैराग्य।

⇒ ईश्वर अस्तित्व के प्रमाण —
(1) कार्य-कारण नियम पर आधृत तर्क।
(2) अदृष्ट नियम पर आधृत तर्क।
(3) वेदों की प्रमाणिकता पर आधृत तर्क।
(4) श्रुतियों की आप्तता पर आधृत तर्क।
(5) उदयनाचार्य ने इसकी प्रमाणिकता हेतु आठ (8) तर्कों की व्याख्या की है।